बढ़ती जनसंख्या चिंता का कारण

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

पूरे विश्व की इस समय लगभग सात अरब जनसंख्या है। यूरोपीय देश प्रयास कर रहे है कि उनके देश की जनसंख्या बढ़े। किन्तु वहां की जनसंख्या अधिक नहीं बढ़ रही है। चीन की जनसंख्या एक अरब साठ करोड़ है। चीन में साम्यवादी शासन प्रणाली है। वहां पर जन्म के बाद बच्चे के लालन पालन और शिक्षा का उत्तरदायित्व सरकार देखती है। किन्तु भारत में प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली है। यहां पर बच्चे का पालन–पोषण माता–पिता के द्वारा होता है। भारत की जनसंख्या दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। विकास की गति उतनी नहीं है जितनी जनसंख्या बढ़ने की है। अतः दोनों में बहुत अन्तर है। इस अन्तर के कारण भारत में गरीबी बढ़ती जा रही है। पहले यहां पर हम दो हमारे दो का नारा दिया गया था। किन्तु आजकल हम दो हमारा एक का नारा दिया जा रहा है। भारत में अनेक जातियों और धर्मों के लोग रहते है। यहां के कुछ जातियों का यह मन्तव्य है कि जनसंख्या को बढ़ाया जाये, जिससे अल्पसंख्यक से बढ़कर हम बहुसंख्यक हो जाये। ऐसे लोगों का मन्तव्य है कि जनसंख्या वृद्धि ऊपर वाले के हाथ में है। किन्तु उनकी यह सोच ठीक नहीं है। भारत में जनसंख्या वृद्धि एक प्रकार का देश पर भार होती जा रही है। भारत की जनसंख्या इतनी द्रूत गति से बढ़ रही है कि इसे जनसंख्या विस्फोट नाम दे दिया है। जनसंख्या विस्फोट के फलस्वरूप देश में आर्थिक प्रगति में बाधा पहुंच रही है। लोगों के रहन–सहन का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से भारत विश्व के देशों में दूसरे नंबर पर है। पहला स्थान जनसंख्या वृद्धि में चीन का है। भारत का भौगोलिक क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का लगभग 2. 4 प्रतिशत है और भारत की जनसंख्या विश्व की जनसंख्या के मुकाबले 16.7 प्रतिशत है। भारत में जनसंख्या के घनत्व तथा भूमि पर बढ़ते हुए दबाव का अनुमान स्वयं लगाया जा सकता है। भारत में अनियन्त्रित जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण अत्यधिक जन्मदर तो है ही, इसके अलावा पड़ोसी देशों के घुसपैठियों ने जनसंख्या का घनत्व बिगाड़ दिया है। विदेशी नागरिकों की भारी संख्या में भारत में घुसपेठ के कारण यहां की जनसंख्या बढ़ती चली जा

रही है। भारत में अर्थव्यवस्था एवं शांतिव्यवस्था को बिगाड़ने के लिए पाकिस्तान अपने नागरिकों को भारत में भेजता रहा है। बांग्लादेश के निर्माण के समय कई करोड़ वहां के नागरिक भारत में आ गये थे। अभी भी अवैध लोगों का आना–जाना भारत में लगा रहता है। म्यांम्यार के जो शरणार्थी भारत आये थे वे यही पर रहकर भारत की जनसंख्या वृद्धि कर रहे है। इन सब कारणों से भारत की जनसंख्या बढती चली जा रही है। औद्योगीकरण के कारण नगरों पर जनसंख्या भार अधिक बढ़ा है। इसके साथ ही साथ वेश्यावृत्ति को भी बढ़ावा मिला है। जिसके फलस्वरूप अनेक अवैध और अवांछित बालकों ने जन्म लिया है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार हुआ है और मृत्युदर में कमी आई है। जनसंख्या की दृष्टि से भारत प्रतिवर्ष आस्ट्रेलिया जैसे एक देश को जन्म देता है। अर्थात् भारत में प्रतिवर्ष इतनी जनसंख्या बढ़ जाती है जितनी जनसंख्या आस्ट्रेलिया महाद्वीप की है। यदि देश में जनसंख्या वृद्धि की यही दशा रही तो निकट भविष्य में ही जनसंख्या और संसाधनों के मध्य संतुलन बिगड़ जायेगा तथा एक विस्फोटक स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। जनसंख्या वृद्धि के कारण सबसे बड़ी समस्या खाद्यान की आयेगी। भारत की स्थिति विशेष समस्या पूर्ण है। जनसंख्या की दृष्टि से समस्त विकास कार्यक्रम बनाये जाते है। उसके लिए धन की व्यवस्था करने के लिए नए कर लगाये जाते है। घाटे का बजट बनाया जाता है। फलतः मुद्रास्फीति एवं महंगाई जैसी समस्याएं उत्पन्न होती है जिसका देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। विकास कार्यों के लिए नीजि संसाधनों के द्वारा पूर्ति न होने पर विदेशों से कर्ज लेना पड़ता है। कर्ज के कारण स्थानीय उद्योग धन्धे प्रभावित होते है। कभी–कभी मुद्रा का अवमूल्यन भी करना पड़ता है। फलतः देश में गरीबी बढ़ती है। रोजगार और नौकरी के क्षेत्र एवं संभावनाएं सीमित होती हैं। सीमित साधनों द्वारा असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति संभव नहीं है। बैरोजगारी के फलस्वरूप अपराधों और अपराधियों की संख्या में वृद्धि होती है। भारत में बढ़ते हुए आतंकवाद के मूल में शिक्षित एवं महत्वाकांक्षी युवकों की बैरोजगारी एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारण है। जनसंख्या वृद्धि के कारण पर्यावरण को भारी नुकसान हो रहा है। कृषि, उद्योगों, भवनों, सड़कों आदि में वृद्धि के लिए वन काटे जाते है। भोजन के लिए तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए अनेक पशु–पक्षियों की हत्या की जाती है। फलतः पर्यावरण की

समस्या उत्पन्न होती है। जनसंख्या वृद्धि ने आवास की समस्या उत्पन्न कर दी है। भारत में कई करोड़ लोग ऐसे है जिनके पास अपना आवास नहीं है। ऐसे लोग सड़कों के किनारे या रेल्वेस्टेशनों पर अपना जीपवन काट लेते है। बड़े नगरों में लोग फुटपातों पर रेल की पटरीयों के सहारे, दुकानों के पटरों पर, पेड़ों के नीचे खाली जगहों पर सोते हैं और अवसर मिलने पर झुग्गी झोपड़ी बना लेते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण हमारे देश में बहुत सीमित आबादी को ही पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो पाता है। लाखों लोग बिना खाये सो जाते है या भिक्षावृत्ति के द्वारा अपना भरण–पोषण करते है। बहुत से लोग कुपोषणजन्य रोगों का शिकार होकर असमय में ही कालकवलित हो जाते है। अतः बढ़ती हुई जनसंख्या चिंता का मुख्य कारण है।